08

क्षेत्रीय आकांक्षाएं

सीखने के प्रतिफल

- छात्र राष्ट्र निर्माण की चुनौतियां से अवगत होंगे।
- छात्र समस्याओं की प्रकृति को समझेंगे।

परिचय

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया आरंभ हुई। समय बीतने के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में कई चुनौतियां आई जिसमें कुछ पुराने थे तो कुछ नये। भारत लोकतंत्र के रास्ते पर धीरे-धीरे ही सही मजबूती से आगे बढ़ रहा था। 1980 के दशक में भाषा, क्षेत्र तथा स्वायत्तता के सवाल पर आंदोलन शुरू हो गए। कभी-कभी इन आंदोलनों में राष्ट्रीय अखंडता के लिए खतरा पैदा कर दिया। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में **क्षेत्रीय आकांक्षाओं** को सम्मान देकर समस्या का हल निकालने का प्रयास निरंतर जारी है।

क्षेत्रीय आकांक्षाएं:

किसी क्षेत्र विशेष के लोगों द्वारा भाषा, धर्म, संस्कृति, विशिष्ट विशेषताओं के आधार पर की जाने वाली विशिष्ट मांगों को क्षेत्रीय आकांक्षाओं की भावनाओं के रूप में समझा जा सकता है।

सरकार का नजरिया

- भारत ने स्वयं को एक लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में स्थापित किया और सभी विविधताओं और मांगों को स्वीकार करने का आश्वासन दिया।
- भारत में लोगों की मांगों और आकांक्षाओं को चुनौती के रूप में नहीं बल्कि लोकतंत्र समर्थक एवं विकास के साधन के रूप में देखा।
- भारत सरकार ने नीति निर्माण की प्रक्रिया में क्षेत्रीय मुद्दों पर भी ध्यान दिया।

तनाव के दायरे

- भारत जैसे विशाल देश में तनाव का दायरा उसकी विविधताओं के अनुरूप ही था। आजादी के तुरंत बाद भारत का विभाजन, बड़ी जनसंख्या का पलायन, देशी रियासतों का विलय और राज्यों का पुनर्गठन जैसी समस्याओं पड़ा था।

© JCERT not to be republished

- आजादी के तुरंत बाद पाकिस्तान के साथ जम्मू कश्मीर को लेकर विवाद शुरू हुआ।
- पूर्वोत्तर भारत (नागालैंड मिजोरम) में भारत से अलग होने का आंदोलन जोर पकड़ा।
- भाषा के आधार पर राज्यों के गठन की मांग जोर पकड़ी। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात ऐसे ही आंदोलन वाले राज्य हैं।
- दक्षिण भारत में (द्रविड़ आंदोलन) भाषाई आधार पर हुआ।
- 1950 के दशक में पंजाबी लोगों ने अपने लिए एक अलग राज्य की मांग रखी ।

क्षेत्रीय आकांक्षाओं के कारण

1. धार्मिक विभिन्नता
2. सांस्कृतिक विभिन्नता
3. भौगोलिक विभिन्नता
4. राजनीतिक स्वार्थ
5. संतुलित विकास
6. क्षेत्रीय राजनीतिक दल

जम्मू एवं कश्मीर

"कश्मीर विवाद" भारत एवं पाकिस्तान के बीच विवाद का एक बहुत बड़ा मुद्दा है । स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर आज तक जम्मू कश्मीर लगातार हिंसा से जूझ रहा है । जम्मू कश्मीर मुस्लिम बहुल राज्य हैं। लेकिन इस राज्य की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति के बहुत से आयाम है । जम्मू कश्मीर के तीन भौगोलिक क्षेत्र हैं—जम्मू, कश्मीर, लद्दाख

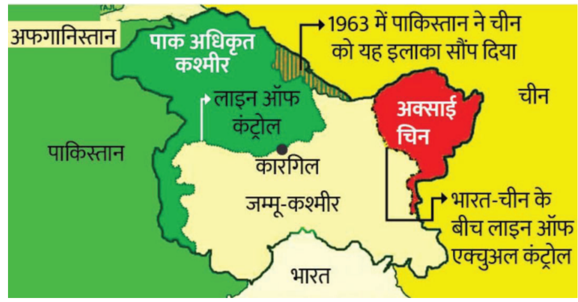

जम्मू और कश्मीर

समस्या की जड़ें

- स्वतंत्रता प्राप्ति के समय हरि सिंह कश्मीर के शासक थे
- हिंदू शासक हरि सिंह भारत-पाकिस्तान किसी में शामिल ना हो कर अपने लिए एक अलग स्वतंत्र राष्ट्र का मंसूबा पाले हुए थे
- लेकिन कश्मीर की आबादी मुस्लिम होने के कारण पाकिस्तान के नेता इसे पाकिस्तान में शामिल करवाना चाहते थे
- इस परिस्थिति में शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व वाली नेशनल कांफ्रेंस ने आंदोलन शुरू किया। वह हरि सिंह के खिलाफ थे। लेकिन शेख अब्दुल्ला पाकिस्तान में भी शामिल होने के खिलाफ थे।
- **अक्टूबर 1947** में पाकिस्तान के कबायली लड़ाकों ने कश्मीर पर हमला कर दिया। वे कश्मीर को पाकिस्तान में मिलाना चाहते थे।
- ऐसी परिस्थिति में कश्मीर के शासक हरि सिंह ने भारत के सैन्य मदद मांगी
- भारत सरकार ने कश्मीर के भारत संघ में विलय के दस्तावेज पर हस्ताक्षर करवाए
- जम्मू कश्मीर के कुछ भूभाग पर पाकिस्तान का कब्जा बना रहा, जिसे **एल.ओ.सी. (लाइन ऑफ कंट्रोल)** कहा गया।

© JCERT not to be republished

- मार्च 1948 में शेख अब्दुल्ला जम्मू-कश्मीर के प्रधानमंत्री बने।
- भारत सरकार ने **धारा 370** का प्रावधान कर जम्मू कश्मीर की स्वतंत्रता को बरकरार रखा।

बाहरी और आंतरिक विवाद

कश्मीर समस्या को लेकर भारत और पाकिस्तान दोनों के अपने-अपने तर्क हैं। भारत इस समस्या को द्विपक्षीय मानता है। वहीं पाकिस्तान इस समस्या का अंतर्राष्ट्रीयकरण कर अपना हित साधने का प्रयास करता है। समस्या के प्रति दृष्टिकोण कुछ भी हो लेकिन कश्मीर भारत का अभिन्न अंग था, है और रहेगा।

1. **कश्मीर समस्या**
2. **बाहरी आयाम**
3. **आंतरिक आयाम**
4. **पाकिस्तान का दृष्टिकोण**
    - पाकिस्तान कश्मीर घाटी पर अपना दावा करता है ।
    - 1947 में पाकिस्तान समर्थित कबायली हमले में राज्य के एक हिस्से पर पाकिस्तान ने नियंत्रण कर लिया है।
    - पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को **आजाद कश्मीर** कहता है।
5. **भारत का दृष्टिकोण**
    - एक वर्ग धारा 370 के तहत प्राप्त विशेष अधिकारों का विरोध करता है।
    - दूसरे वर्ग के अनुसार धारा 370 द्वारा दी गई स्वायत्तता कश्मीर के लिए पर्याप्त नहीं है।
    - तीसरा वर्ग जम्मू कश्मीर को अन्य राज्यों के भांति और अधिक अधिकार प्रदान करने की बात करता है।

राजनीति: 1948 के बाद से

- प्रधानमंत्री के रूप में शेख अब्दुल्लाह ने भूमि सुधार तथा जन कल्याण संबंधी अनेक कार्य किए
- कश्मीर की स्थिति को लेकर शेख अब्दुल्ला और तत्कालीन केंद्र सरकार के बीच वैचारिक मतभेद
- 1953 में शेख अब्दुल्ला को बर्खास्त कर नजरबंद कर दिया गया
- 1953 से लेकर 1974 तक कश्मीर पर कांग्रेस का नियंत्रण स्थापित रहा
- 1974 में इंदिरा गांधी और शेख अब्दुल्ला के बीच समझौता हुआ
- शेख अब्दुल्लाह की मृत्यु (1982) से कांग्रेस के सहयोग से फारूक अब्दुला कश्मीर के मुख्यमंत्री बने
- कुछ समय के बाद फारूक अब्दुल्ला की सरकार को बर्खास्त कर दिया गया। इससे कश्मीर के लोगों में नाराजगी पैदा हुई।
- 1987 के चुनाव में नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस पार्टी की मिली जुली सरकार बनी फारूक अब्दुल्ला मुख्यमंत्री बने
- कश्मीर की राजनीति में केंद्र सरकार के लगातार हस्तक्षेप से कश्मीर में राजनीतिक संकट पैदा हो गया
- 1989 तक जम्मू कश्मीर उग्रवादी आंदोलन की गिरफ्त में आ चुका था।
- पाकिस्तान ने यहां के लोगों को अलग कश्मीर राष्ट्र के नाम पर एकजुट कर लिया था

© JCERT not to be republished
JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

- 1996 में फारूक अब्दुल्ला के नेतृत्व में नेशनल कांफ्रेंस की सरकार बनी,जिसने कश्मीर के लिए क्षेत्रीय स्वायत्तता की मांग की

- 2002 के चुनाव में पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी और कांग्रेस की गठबंधन सरकार सत्ता में आई

अलगाववाद और उसके बाद

- 1989 —1990 से जम्मू - कश्मीर में हिंसक अलगाववादी राजनीति शुरू हुई।
- अलगाववादियों का एक वर्ग जम्मू -कश्मीर को एक स्वतंत्र राष्ट्र बनाना चाहता था ।
- दूसरा वर्ग जम्मू - कश्मीर का विलय पाकिस्तान में चाहता था
- तीसरे वर्ग के अनुसार जम्मू - कश्मीर भारत संघ का हिस्सा रहे, लेकिन उसे और अधिक स्वायत्तता प्रदान की जाए।

पंजाब

- 1920 ई०के दशक में गठित **अकाली दल** ने पंजाबी भाषी लोगों के लिए एक अलग राज्य के लिए आंदोलन चलाया।
- 1966 ई०में हिंदी भाषी क्षेत्र हरियाणा तथा पहाड़ी क्षेत्र हिमाचल प्रदेश को पंजाब से अलग कर दिया गया।
- राजनीतिक अस्थिरता के दौर में अकाली दल के एक गुट ने 1977 ई० में आनंदपुर साहिब में स्वायत्तता का एक प्रस्ताव पारित किया।
- 1980 ई० में धार्मिक चरमपंथी सिख नेताओं ने एक अलग राष्ट्र **खालिस्तान** की मांग को लेकर हिंसक आंदोलन शुरु किया।
- उग्रवादियों ने **अमृतसर के स्वर्ण मंदिर** को अपना मुख्यालय बनाया और स्वर्ण मंदिर को एक हथियारबंद किले में तब्दील कर दिया गया।
- उग्रवादियों द्वारा किए जाने वाले हिंसक घटनाओं को देखते हुए जून 1984 ई० में तत्कालीन भारत सरकार ने **ऑपरेशन ब्लू स्टार** के नाम से एक सैन्य कार्यवाही स्वर्ण मंदिर में किया
- ऑपरेशन ब्लू स्टार से स्वर्ण मंदिर को उग्रवादियों के कब्जे से मुक्त करा लिया गया। लेकिन सिखों ने इसे अपने धार्मिक विश्वास पर हमला माना।
- ऑपरेशन ब्लू स्टार की कार्रवाई का बदला लेने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री **इंदिरा गांधी** की **31 दिसंबर 1984** ई०को उसके सिख अंग रक्षकों के द्वारा उनके आवास में हत्या कर दी गई।
- इंदिरा गांधी की हत्या के विरोध में देशभर में सिख विरोधी दंगे हुए। दिल्ली, कानपुर, बोकारो जैसे देश के कई शहरों में सैकड़ों सिख मारे गए।

शांति की ओर

- जुलाई 1985 ई०में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने अकाली दल के तत्कालीन अध्यक्ष हरचरण सिंह लोगों वाला के साथ एक समझौता किया। इसे **राजीव गांधी लोगों वाला समझौता** या **पंजाब समझौता** कहा जाता है।
- यह समझौता पंजाब में शांति स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था समझौते के महत्वपूर्ण बिंदु निम्नलिखित थे —
  - चंडीगढ़, पंजाब को दे दिया जाएगा ।

© JCERT not to be republished

- पंजाब और हरियाणा के बीच सीमा विवाद को सुलझाने के लिए आयोग के गठन का प्रावधान।
- पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के बीच रावी और व्यास नदी के पानी के बंटवारे के लिए ट्रिब्यूनल का गठन।
- पंजाब में उग्रवाद से प्रभावित लोगों को मुआवजा दिया जाएगा।
- पंजाब से विशेष सुरक्षा बल अधिनियम वापस।

- इन सबके बावजूद पंजाब लंबे समय तक हिंसक गतिविधियों से त्रस्त रहा। अलगाववादी हिंसा और इस हिंसा को दबाने के लिए की गई कार्यवाही में मानवाधिकारों का उल्लंघन हुआ।
- पंजाब में लंबे समय तक राष्ट्रपति शासन कायम रहा।
- 1990 ई० के दशक में पंजाब में शांति बहाली हुई। उग्रवाद की समाप्ति के बाद 1997 ई०में पंजाब में पहला चुनाव हुआ, जिसमें अकाली दल (बादल) और भाजपा के गठबंधन की सरकार बनी।
- वर्तमान में पंजाब राजनीतिक रूप से शांत और विकास के पथ पर अग्रसर है।

पूर्वोत्तर

भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में 7 राज्य हैं। इसमें **अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा** और **सिक्किम** शामिल है।इन्हें **"सात बहने"** कहा जाता है। इस क्षेत्र की सीमाएं **चीन, म्यांमार** और **बांग्लादेश** से लगती है। इस इलाके को भारत के लिए **दक्षिण पूर्व एशिया का प्रवेश द्वार** भी कहा जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस क्षेत्र का व्यापक राजनीतिक पुनर्गठन हुआ।

राज्यों का गठन	**वर्ष**
नागालैंड -	**1963 ई०**
मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा	**1972 ई०**
मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश	**1987 ई०**

पूर्वोत्तर भारत का नक्शा

पूर्वोत्तर क्षेत्र के समस्या ग्रस्त होने के कारण

- शेष भारत से अलग-थलग
- आर्थिक पिछड़ापन
- राजनीति का सीमित दायरा
- जटिल सामाजिक संरचना
- परिवहन और संचार व्यवस्था का अभाव
- संवेदनशील राजनीतिक स्वभाव

© JCERT not to be republished

- जटिल भौगोलिक स्थिति
- शरणार्थियों (पड़ोसी राज्यों और देशों से आने वाले लोग) के कारण जनसंख्या की संरचना में आया बदलाव

पूर्वोत्तर के राज्यों की राजनीति के मुद्दे

- स्वायत्तता की मांग
- अलगाववादी आंदोलन
- बाहरी लोगों का विरोध

स्वायत्तता की मांग

- स्वतंत्रता प्राप्ति के समय मणिपुर और त्रिपुरा को छोड़कर बाकी पूरा इलाका **असम** कहलाता था
- गैर असमी लोगों को जब लगा कि असम की सरकार उन पर असमी भाषा थोप रही है, तब इस इलाके में राजनीतिक स्वायत्तता की मांग उठने लगी
- असम से अलग होने की शर्त पर बड़े जनजाति समुदाय के नेताओं ने "ईस्टर्न इंडिया ट्राइबल यूनियन" का गठन किया 1960 ई० में कहीं ज्यादा व्यापक "ऑल पार्टी कॉन्फ्रेंस" में बदल गया।
- इन नेताओं की मुख्य मांग थी असम से अलग एक जनजातीय राज्य बनाने की।
- इनकी मांगों को देखते हुए केंद्र सरकार ने अलग-अलग समय में असम से अलग मेघालय,मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश का गठन किया।
- 1972 ई० तक पूर्वोत्तर के पुनर्गठन का कार्य पूरा हो चुका था लेकिन स्वायत्तता की मांग अभी भी खत्म नहीं हुई थी असम के बोडो ,करबी और दिमसा जैसे समुदायों ने अपने अलग राज्य के लिए हिंसक आंदोलन किए।
- करबी और दिमसा समुदायों को जिला परिषद के अंतर्गत सहायता प्रदान की गई जबकि बोडो जनजाति को हाल ही में स्वायत्त परिषद् का दर्जा दिया गया।

अलगाववादी आंदोलन

- भारतीय नेतृत्व को पूर्वोत्तर के दो राज्यों **मिजोरम** और **नगालैंड** में अलगाववादी आंदोलन का लंबे समय तक सामना करना पड़ा।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मिजो पर्वतीय क्षेत्र को असम के अंदर ही एक स्वायत जिला बना दिया गया था।
- लेकिन 1959 ई० में मिजो पर्वतीय इलाकों में पड़े आकाल में समुचित प्रबंधन के अभाव में असम सरकार के खिलाफ अलगाववादी आंदोलन शुरू हो गया।
- मिजो लोगों ने **लालडेंगा** के नेतृत्व में **मिजो नेशनल फ्रंट** का गठन किया।
- 1966 ई० में मिजो नेशनल फ्रंट ने अलग राज्य की मांग को लेकर सशस्त्र विद्रोह शुरू कर दिया। यह लड़ाई दो दशकों तक चली।
- **1986 ई०** में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी और लालडेंगा के बीच एक समझौता हुआ इस समझौते के अंतर्गत **मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा** दिया गया।
- आज मिजोरम पूर्वोत्तर का सबसे शांतिपूर्ण राज्य है और उसने कला साहित्य तथा विकास की दिशा में अच्छी प्रगति की है।
- मिजोरम की तरह **नागालैंड** में भी अलगाववादी आंदोलन शुरू हुआ।

© JCERT not to be republished

- 1951 ई० में अंगमी जापू फिजों के नेतृत्व में नागा लोगों ने अलग राष्ट्र की मांग को लेकर हिंसक आंदोलन किया।

बाहरी लोगों के खिलाफ आंदोलन

- भारत के दूसरे राज्यों तथा किसी अन्य देश से आए लोगों को पूर्वोत्तर की जनता सामाजिक, से आर्थिक तथा राजनीतिक तौर पर प्रतिद्वंदी के रूप में देखती है।
- 1971 ई० के बांग्लादेश युद्ध के दौरान असम में बांग्लादेश के काफी नागरिक भारत आए।
- स्थानीय असमी लोगों को लगा कि अगर इन लोगों को वापस अपने देश नहीं भेजा गया तो असमी जनता अल्पसंख्यक हो जाएगी।
- 1979 ई०में ऑल असम स्टूडेंट यूनियन (आसू AASU) के द्वारा हिंसक आंदोलन चलाया गया। यह एक छात्र संगठन था।जिसका उद्देश्य था 1951 ई० के बाद जितने भी लोग असम में आकर बसे हैं, उन्हें असम से बाहर भेजा जाए।
- 1985 ई० में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी और आसू नेताओं के बीच एक समझौता हुआ। जिसमें तय किया गया कि जो लोग बांग्लादेश युद्ध के दौरान अथवा उसके बाद असम आए हैं, उनकी पहचान कर उन्हें वापस भेजा जाए।

समाहार और राष्ट्रीय अखंडता

स्वतंत्रता प्राप्ति के छह दशक बाद भी राष्ट्रीय अखंडता के कुछ मुद्दों का समाधान पूरी तरह से नहीं हो पाया है। समय के साथ-साथ कहीं-ना-कहीं अलग राज्य बनाने की मांग उठती है, तो कहीं आर्थिक विकास का मुद्दा उठता है । कहीं-कहीं अलगाववाद के स्वर उभरते हैं। ऐसी परिस्थिति में क्षेत्रीय आकांक्षाएं, लोकतांत्रिक राजनीति से सही भूमिका निभाने की अपेक्षा करती है।

क्षेत्रीय आकांक्षाओं के सबक

- क्षेत्रीय आकांक्षाएं लोकतांत्रिक राजनीति का अभिन्न अंग है।
- क्षेत्रीय आकांक्षाओं को दबाने की जगह उनके साथ लोकतांत्रिक बातचीत का रास्ता अपनाया जाना चाहिए।
- सत्ता में सभी वर्गों, क्षेत्रों की साझेदारी को सुनिश्चित करना।
- क्षेत्रीय आर्थिक असंतुलन को मिटाने की दिशा में प्रयास करना।
- क्षेत्रीय विभिन्नताओं का सम्मान करना।
- संवैधानिक ढांचा ज्यादा लचीला और सर्व समावेशी बनाना।

क्षेत्रवाद—"क्षेत्र विशेष के आधार पर राजनीति आर्थिक एवं विकास के लिए आवाज उठाना।"

पृथकतावाद "किसी क्षेत्र विशेष के लोगों का देश से अलग होने की मांग करना।"

द्रविड़ आंदोलन

- यह आंदोलन भारतीय राजनीति का पहला और मजबूत क्षेत्रीयतावादी आंदोलन था।
- इस आंदोलन का उद्देश्य दक्षिण भारत में एक स्वतंत्र राष्ट्र (द्रविड़ राष्ट्र) का निर्माण करना था।
- आंदोलन का नेतृत्व तमिल समाज सुधारक **ई वी रामास्वामी नायकर (पेरियार)** ने किया।

© JCERT not to be republished

- आंदोलन ब्राह्मणों के वर्चस्व का विरोध करता था।
- उत्तर भारत के राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभुत्व को नकारते हुए द्रविड़ अस्मिता पर बल देता था।
- इस आंदोलन के प्रारंभ में "द्रविड़ कषगम" नामक एक संगठन बना,जो आगे चलकर **डीएमके (द्रविड़ मुनेत्र कषगम)**हो गई।
- डीएमके ने तमिल संस्कृति के इतिहास को ज्यादा महत्व दिया तथा हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने का विरोध किया।
- दक्षिणी राज्यों से समर्थन न मिलने के कारण यह आंदोलन धीरे-धीरे **तमिलनाडु** तक सिमट कर रह गया।
- वर्तमान समय में द्रविड़ आंदोलन से निकली पार्टियां **डीएमके, एआईडीएमके** तमिलनाडु की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

गोवा की मुक्ति

- 1947 ई० में भारत ब्रिटिश गुलामी से मुक्त हो गया था लेकिन गोवा, दमन और दीव पर **पुर्तगाल** का शासन था।
- पुर्तगाली शासन से गोवा को मुक्त कराने के लिए गोवा मुक्ति आंदोलन चलाया गया।
- भारत सरकार ने दिसंबर **1961ई०** में अपनी सेना भेजकर गोवा को पुर्तगाली शासन से मुक्त करा लिया।
- मराठी अस्मिता से जुड़ी पार्टियां गोवा को महाराष्ट्र में शामिल कराना चाहती थी, लेकिन जनमत संग्रह के द्वारा गोवा की जनता ने अलग बने रहने का फैसला किया।
- अंततः1987 ई० में गोवा भारत संघ का एक राज्य बना।

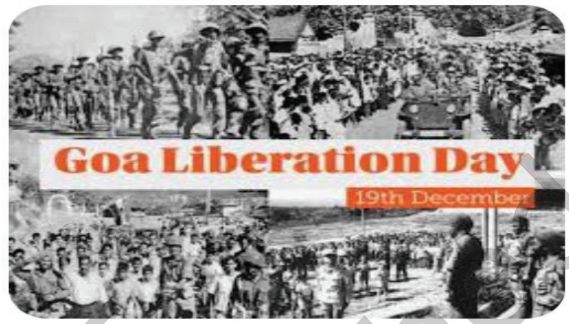

स्मरणीय तथ्य

पंजाब और हरियाणा का गठन —1966 ई०

छत्तीसगढ़ का गठन —1 नवंबर 2000 ई०

उत्तराखंड का गठन — 9 नवंबर 2000 ई०

झारखंड का गठन —15 नवंबर 2000 ई०

आत्मसम्मान आंदोलन के जनक —
ई वी रामास्वामी नायकर

अकाली दल की स्थापना — 1920 ई०

ऑपरेशन ब्लू स्टार जून —1984 ई०

इंदिरा गांधी की हत्या —
31 अक्टूबर 1984 ई०

सिख दंगों की जांच के लिए बना आयोग—
नानावती आयोग

सिक्किम का भारत में विलय —
15 मई 1975 ई०

कश्मीर से धारा 370 की समाप्ति—
5 अगस्त 2019 ई०

© JCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न—उत्तर

प्रश्न 1. क्षेत्रीय आकांक्षाओं की प्रकृति	राज्य
(क) सामाजिक धार्मिक पहचान के आधार पर राज्य का निर्माण।	(i) नागालैंड/मिजोरम
(ख) भाषायी पहचान और केंद्र के साथ तनाव	(ii) झारखंड/छत्तीसगढ़
(ग) क्षेत्रीय असंतुलन के फलस्वरूप राज्य का निर्माण	(iii) पंजाब
(घ) आदिवासी पहचान के आधार पर अलगाववादी माँग।	(iv) तमिलनाडु

उत्तर—

(क) (iii) पंजाब

(ख) (iv) तमिलनाडु

(ग) (i) नागालैंड/मिजोरम

(घ) (ii) झारखंड/छत्तीसगढ़

प्रश्न 2. पूर्वोत्तर के लोगों की क्षेत्रीय आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति कई रूपों में होती है। बाहरी लोगों के खिलाफ आंदोलन, ज्यादा स्वायत्तता की माँग के आंदोलन और अलग देश बनाने की माँग करना, ऐसी ही कुछ अभिव्यक्तियाँ हैं। पूर्वोत्तर के मानचित्र पर इन तीनों के लिए अलग-अलग रंग भरिए और दिखाइए कि किस राज्य में कौन-सी प्रवृत्ति ज्यादा प्रबल है।

उत्तर—

आन्दोलन का स्वरुप	**राज्य**
बाहरी लोगों के खिलाफ आंदोलन	असम
ज्यादा स्वायत्तता की माँग के आंदोलन	मणिपुर व त्रिपुरा
अलग देश की माँग	नागालैंड व मिजोरम

प्रश्न 3. पंजाब समझौते के मुख्य प्रावधान क्या थे? क्या ये प्रावधान पंजाब और उसके पड़ोसी राज्यों के बीच तनाव बढ़ाने के कारण बन सकते हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर— पंजाब सूबे के पुनर्गठन के बाद अकाली दल ने यहाँ 1967 और इसके बाद 1977 में सरकार बनायी। राजीव गाँधी ने प्रधानमंत्री बनने के बाद अकाली दल के नरमपंथी नेताओं से बातचीत शुरू की और सिक्ख समुदाय को शांत करने का प्रयास किया। फलस्वरूप 1985 में अकाली दल के अध्यक्ष संत हरचंद सिंह लोगोंवाल और राजीव गाँधी के बीच समझौता हुआ। समझौता पंजाब में अमन कायम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। इसकी मुख्य बातें निम्नलिखित थी:

1. चंडीगढ़ पर पंजाब का हक माना गया और यह आश्वासन दिया गया कि यह शीध्र ही पंजाब को दे दिया जाएगा।

2. पंजाब और हरियाणा के बीच सीमा विवाद सुलझाने के लिए एक अलग आयोग स्थापित किया जाएगा।

© JCERT not to be republished

3. रावी और व्यास के पास का पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के बीच बँटवारे करने के लिए एक न्यायाधिकरण (ट्रिब्यूनल) बैठाया जाएगा।

4. सरकार ने वचन दिया कि वह भविष्य में सिक्खों के साथ बेहतर व्यवहार करेगी और उन्हें राष्ट्रीय धारा में किए गए उनके योगदान के आधार पर सम्मानपूर्वक रखा जाएगा।

1991 के लोकसभा चुनावों के समय स्थिति सामान्य बनाने के लिए सरकार ने फरवरी 1992 में विधानसभा के चुनाव भी करवाए लेकिन अकाली दल समेत अन्य दलों ने इन चुनावों का बहिष्कार किया। आतंकवादियों ने भी इन लोगों को मतदान न करने की धमकी दी। पंजाब में 1990 के दशक के मध्य के बाद ही स्थिति सामान्य होने लगी। सुरक्षा बलों ने उग्रवाद को दबाया तथा जिसके कारण 1997 के चुनाव कुछ सामान्य स्थिति में हुए। 2002 के विधानसभा चुनाव में अकाली दल सत्ताहीन हुआ तथा 2007 के चुनाव में फिर से सत्ता में आया। इसी प्रकार पंजाब में हिंसा का चक्र लगभग एक दशक तक चलता रहा। पंजाब की जनता को इन उग्रवादी गुटों की हिंसा का शिकार होना पड़ा। उग्रवादियों ने लोंगोवाल की हत्या कर दी तथा मुख्यमंत्री बेअंतसिंह की भी सचिवालय में हत्या कर दी गई थी। मानवाधिकारों का उल्लंघन भी हुआ। उग्रवादी दलों ने पंजाब की आर्थिक स्थिति तथा विकास गतिविधियों पर बुरा प्रभाव डाला। वर्तमान में पंजाब में स्थिति सामान्य कही जा सकती है।

प्रश्न 4. आनंदपुर साहिब प्रस्ताव के विवादास्पद होने के क्या कारण थे?

उत्तर— आनंदपुर साहिब प्रस्ताव के विवादास्पद होने का मुख्य कारण यह था कि प्रस्ताव में पंजाब सूबे के लिए अधिक स्वायत्तता की माँग थी। आनंदपुर साहिब प्रस्ताव का सिख जन-समुदाय पर बड़ा कम असर पड़ा। कुछ साल बाद जब 1980 में अकाली दल की सरकार बर्खास्त हो गई तो अकाली दल ने पंजाब तथा पड़ोसी राज्यों के बीच पानी के बँटवारे के मुद्दे पर एक आंदोलन चलाया। धार्मिक नेताओं के एक तबके ने स्वायत्त सिख पहचान की बात उठायी। कुछ चरमपंथी तबकों ने भारत से अलग होकर 'खालिस्तान' बनाने की वकालत की।

प्रश्न 5. जम्मू-कश्मीर की अंदरूनी विभिन्नताओं की व्याख्या कीजिए और बताइए कि इन विभिन्नताओं के कारण इस राज्य में किस तरह अनेक क्षेत्रीय आकांक्षाओं ने सिर उठाया है।

उत्तर— जम्मू-कश्मीर के अंदर विभिन्न आधारों पर क्षेत्रीय विभिन्नताएँ हैं। जम्मू-कश्मीर तीन सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों जम्मू, कश्मीर और लद्दाख से बना हुआ है। आंतरिक रूप से भारतीय संघ में कश्मीर के दर्जे के बारे में विवाद है। कश्मीरी भाषी लोगों में अल्पसंख्यक हिन्दू भी शामिल हैं। जम्मू क्षेत्र पहाड़ी तलहटी तथा मैदानी इलाके का मिश्रण है जहाँ हिन्दू, मुस्लिम तथा सिख अर्थात् कई धर्म तथा भाषाओं के लोग रहते हैं। लद्दाख में बौद्ध आबादी है परंतु यह आबादी बहुत कम है। 1947 से पहले जम्मू एवं कश्मीर में राजशाही थी। इसके हिंदू शासक हरिसिंह भारत में शामिल होना नहीं चाहते थे। उन्होंने स्वतंत्र राज्य के लिए भारत तथा पाकिस्तान

के साथ समझौता करने की कोशिश की। राज्य में नेशनल कॉन्फ्रेंस के शेख अब्दुल्ला चाहते थे कि महाराजा पद छोड़ें परंतु पाकिस्तान में शामिल होने के खिलाफ थे। अक्टूबर 1947 में पाकिस्तान ने कबायली घुसपैठियों को अपनी तरफ से कश्मीर पर कब्जा करने भेजा। ऐसे में महाराजा भारतीय सेना से मदद मांगने को मजबूर हुए। इससे पहले भारत सरकार ने महाराजा से भारत संघ में विलय के दस्तावेज पर हस्ताक्षर करा लिए। मार्च 1948 में शेख अब्दुल्ला जम्मू-कश्मीर के प्रधानमंत्री बने। इसे संविधान में धारा 370 का प्रावधान करके संवैधानिक दर्जा दिया गया।

प्रश्न 6. कश्मीर की क्षेत्रीय स्वायत्तता के मसले पर विभिन्न पक्ष क्या हैं? इनमें कौन-सा पक्ष आपको समुचित जान पड़ता है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर— जम्मू-कश्मीर राज्य ने प्रारंभ में स्वतंत्र राज्य बनने की माँग की थी लेकिन जब 1948 में कबालियों ने आक्रमण किया तो इसके एक भाग पर कब्जा कर लिया। ऐसे में महाराजा भारतीय सेना से मदद मांगने को मजबूर हुए। महाराजा ने जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय कर दिया परंतु कुछ विशेष प्रावधानों के साथ। संविधान में अनुच्छेद 370 तथा 371 के तहत इस राज्य को विशेष दर्जा प्रदान किया गया। जम्मू-कश्मीर को अधिक स्वायत्तता देने के लिए अनुच्छेद 370 के लिए अलग-अलग विचार हैं। जैसे कि इसे पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जाना चाहिए। दोनों पक्षों को देखने पर यह बात कही जा सकती है कि जम्मू-कश्मीर का आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास हो। सभी नागरिकों को रोजगार प्राप्त हो तथा पूरे राज्य मे नियोजित विकास हो। वर्तमान में जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है।

प्रश्न 7. असम आंदोलन सांस्कृतिक अभिमान और आर्थिक पिछड़ेपन की मिली-जुली अभिव्यक्ति था। व्याख्या कीजिए।

उत्तर— 1979 से 1985 तक चला असम आंदोलन बाहरी लोगों के खिलाफ चले आंदोलनों का सबसे अच्छा उदाहरण है। असम के लोगों की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर व पहचान है।

असम पूर्वोत्तर के सात राज्यों (जिन्हें सात बहनें भी कहा जात है) में सबसे बड़ा व प्रमुख राज्य है। असमी भाषा बोलने वालों का इन राज्यों में बहुलता है जिसके प्रभुत्व का अन्य राज्यों में बोली जाने वाली भाषा के लोगों ने इसका विरोध किया है।

असमी लोगों को संदेह था कि बहुत -सी बांग्लादेशी मुस्लिम आबादी असम में बसी हुई है। लोगों के मन में यह भावना कर घर कर गई कि इन विदेशी लोगों को पहचानकर इन्हें अपने देश नहीं भेजा गया तो स्थानीय असमी जाति अल्पसंख्यक हो जाएगी। कुछ आर्थिक मामले भी थे। असम में तेल, चाय और कोयले जैसे प्राकृतिक संसाधनों की मौजूदगी के बावजूद व्यापक गरीबी थी। यहाँ की जनता ने माना कि असम के प्राकृतिक संसाधन बाहर भेजे जा रहे हैं और असमी लोगों को कोई फायदा नहीं हो रहा है। 1979 में ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन ने विदेशियों के विरोध में एक आंदोलन चलाया। आंदोलन की माँग थी कि 1951 के बाद जितने भी लोग असम में बसे हैं उन्हें असम से बाहर भेजा जाए। आंदोलन के दौरान त्रासद व हिंसक घटनाएँ भी हुई।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 8. हर क्षेत्रीय आंदोलन अलगाववादी माँग की तरफ अग्रसर नहीं होता। इस अध्याय से उदाहरण देकर इस तथ्य की व्याख्या कीजिए।

उत्तर— स्वायत्तता की माँग करने वाले गुटों के साथ सरकार ने समय-समय पर समझौते किए हैं। भारत में अनेकता में एकता है। स्वायत्तता की माँग के लिए हिंसक आंदोलन भी हुए। सरकार ने इन विविधताओं पर लोकतांत्रिक दृष्टिकोण अपनाया। भारत में स्वतंत्रता के बाद हुए क्षेत्रीय आंदोलन जैसे- उत्तर-पूर्वी राज्यों में हुए आंदोलन अलगाववादी नहीं थे। असम का क्षेत्रीय आंदोलन अलगाववादी नहीं हुआ। पंजाब में अलगाववादी माँग नहीं है। आंदोलन क्षेत्रीय स्वायत्तता, एक राज्य का दूसरे राज्य में विलय, नदी जल बँटवारा, क्षेत्रीय भाषा तथा संस्कृति को लेकर हुए हैं। परंतु ये सभी क्षेत्रीय आंदोलन अलगाववादी नहीं होते।

प्रश्न 9. भारत के विभिन्न भागों में उठने वाली क्षेत्रीय मांगों से 'विविधता में एकता' के सिद्धांत की अभिव्यक्ति होती है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? तर्क दीजिए।

उत्तर— भारत में अनेकता में एकता एक महत्वपूर्ण विशेषता है। पूरे विश्व में भारत एक अलग पहचान रखता है। संस्कृति, धर्म, भाषा, रहन-सहन, कला से अलग होने के बाद भी लोग एक-दूसरे का सम्मान करते हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या, जलवायु, विशाल भू—भाग, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विविधता में विभिन्नता के कारण कई प्रकर के विरोध उत्पन्न हुए हैं। परंतु इन विविधताओं के बाद भी राष्ट्रीय एकता बनी हुई है। विश्वबंधुत्व भारत की प्रमुख विशेषता है। जब 1962 में चीन ने नेफा (वर्तमान अरूणाचल प्रदेश) पर आक्रमण किया तो मद्रासी भी समझता था कि आक्रमण हुआ है, गुजराती भी, उत्तर भारत में रहने वाला इंसान भी समझता था। अतः स्पष्ट है कि माँगों से भारत के विभाजन का अनुमान नहीं लगाया जा सकता बल्कि इसके विपरीत विविधता में एकता प्रदर्शित होती है।

प्रश्न 10. नीचे लिखे अवतरण को पढ़ें और इसके आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दें:

हजारिका का एक गीत.... एकता की विजय पर है; पूर्वोत्तर के सात राज्यों को इस गीत में एक ही माँ की सात बेटियाँ कहा गया है..... मेघालय अपने रास्ते गई....अरूणाचल भी अलग हुई और मिजोरम असम के द्वार पर दूल्हे की तरह दूसरी बेटी से ब्याह रचाने को खड़ा है....इस गीत का अंत असमी लोगों की एकता को बनाए रखने के संकल्प के साथ होता है और इसमें समकालीन असम में मौजूद छोटी-छोटी कौमों को भी अपने साथ एकजुट रखने की बात कही गई है...करबी और मिजिंग भाई-बहन हमारे ही प्रियजन हैं।

-संजीब बरूआ

(क) लेखक यहाँ किस एकता की बात कह रहा है?

(ख) पुराने राज्य असम से अलग करके पूर्वोत्तर के कुछ राज्य क्यों बनाए गए?

(ग) क्या आपको लगता है कि भारत के सभी क्षेत्रों के ऊपर एकता की यही बात लागू हो सकती है?

उत्तर—

(क) लेखक यहाँ की क्षेत्रीय सांस्कृतिक एकता, परस्पर भाईचारे, पूर्वोत्तर की सात पुत्रियों की एकता के माध्यम से विविधता में एकता की बात कर रहा है।

© JCERT not to be republished

(ख) जनजातीय समुदाय के नेता असम से अलग होना चाहते थे क्योंकि गैर- असमी लोगों पर असमी भाषा थोपी जा रही थी। सभी समुदाय अपनी सांस्कृतिक पहचान कायम रखने के लिए तथा आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए असम से अलग होकर पूर्वोत्तर के कुछ राज्य बन गए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. किस दशक को क्षेत्रीय आकांक्षाओं का दशक कहा जाता है ?

   a. 1980 का दशक

   b. 1960 का दशक

   c. 1990 का दशक

   d. 1950 का दशक

2. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय कश्मीर का शासक कौन था?

   a. हरि सिंह b. करण सिंह

   c. शंभू सिंह d. अजीत सिंह

3. ऑपरेशन ब्लू स्टार के समय भारत के प्रधानमंत्री कौन थे ?

   a. श्री लाल बहादुर शास्त्री

   b. श्रीमती इंदिरा गांधी

   c. राजीव गांधी

   d. चंद्रशेखर

4. भारत में दक्षिण एशिया का प्रवेश द्वार किसे कहा जाता है ?

   a. दक्षिण भारत b. उत्तर भारत

   c. पश्चिम भारत d. पूर्वोत्तर भारत

5. छत्तीसगढ़ उत्तराखंड तथा झारखंड की स्थापना वर्ष 2000 में क्रमशःकिस तारीख को हुआ?

   a. 1 नवंबर, 9 नवंबर, 15 नवंबर

   b. 1 नवंबर, 5 नवंबर, 3 दिसंबर

   c. 1 अक्टूबर, 9 अक्टूबर, 15 अक्टूबर

   d. 1 नवंबर, 5 नवंबर, 15 नवंबर

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृथकतावाद

2. क्षेत्रीय आकांक्षा

3. द्रविड़ अस्मिता

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जम्मू कश्मीर के भारत में विलय की प्रक्रिया का वर्णन करें?

2. क्षेत्रीय आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति ने भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली को कहां तक प्रभावित किया?

© JCERT not to be republished